बी.एड़. विभाग

श्री गाँधी महाविद्यालय, सिधौली, सीतापुर, उत्तर प्रदेश

(सम्बद्ध– लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ)

बी.एड़. प्रथम सेमेस्टर के छात्रों के लिए ई– कंटेंट

डॉ. संजीव कुमार शुक्ला
असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड़. विभाग,
श्री गाँधी महाविद्यालय, सिधौली, सीतापुर, उत्तर प्रदेश

सामाजिक गतिशीलता

सामाजिक गतिशीलता

गतिशीलता का तात्पर्य है व्यक्ति की किसी सामाजिक ढाँचे में गति। इस दृष्टि से सामाजिक गतिशीलता का अर्थ किसी व्यक्ति अथवा समूह के सामाजिक पद में होने वाला परिवर्तन है। चूँकि सामाजिक ढाँचे में पद अथवा स्थान ऊँचे–नीचे होते रहते हैं, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति अपनी निजी इच्छा तथा योग्यता के आधार पर इन्हीं सामाजिक पदों में से किसी भी ऊँचे अथवा नीचे पद को प्राप्त करके अपनी सामाजिक स्थिति को ऊँचा अथवा नीचा कर सकता है। सामाजिक स्थिति को ऊँचा–नीचा अथवा इसमें किसी भी प्रकार का तनिक भी परिवर्तन होना सामाजिक गतिशीलता कहलाती है। दूसरे शब्दों में एक सामाजिक स्थिति से दूसरी सामाजिक स्थिति प्राप्त करना ही सामाजिक गतिशीलता है।

सामाजिक गतिशीलता के अर्थ को निम्नलिखित परिभाषाओं से भी समझा जा सकता है–

सोरोकिन के अनुसार– ''सामाजिक गतिशीलता से तात्पर्य है कि किसी व्यक्ति या समूह का एक सामाजिक स्थिति से दूसरी सामाजिक स्थिति में पहुँच जाना।''

सी.वी.गुड़ के अनुसार– ''किसी व्यक्ति अथवा मूल्य का एक सामाजिक स्थिति से किसी दूसरी सामाजिक स्थिति में जाना ही सामाजिक गतिशीलता है।''

सार रूप में कहा जा सकता है किसी सामाजिक स्थिति को त्यागकर किसी व्यक्ति या व्यक्ति समूह का अन्य किसी सामाजिक स्थिति में चले जाना ही सामाजिक गतिशीलता कहलाता है।

सामाजिक गतिशीलता के कारण

विभिन्न समाजशास्त्रियों ने सामाजिक गतिशीलता के अनेक कारण बताये हैं जिनमें से प्रमुख का विवरण निम्नलिखित है–

1. सामाजिक क्रम में परिवर्तन

प्रायः ऐसा भी देखने को मिलता है, कि विभिन्न कारणों से समाज में उपलब्ध विभिन्न सामाजिक पद संख्या में परिवर्तन हो जाता है और इस प्रकार के परिवर्तन के फलस्वरूप कुछ व्यक्तियों की सामाजिक प्रतिष्ठा में भी परिवर्तन हो जाता है। यह परिवर्तन उच्चता या निम्नता, किसी भी दशा में हो सकता है।

2. समाज के आकार में परिवर्तन

सामाजिक गतिशीलता के कारण समाज के सम्पूर्ण ढाँचे में परिवर्तन हो जाता है। इस परिवर्तन के फलस्वरूप कुछ व्यक्तियों की सामाजिक स्थिति में स्वतः परिवर्तन हो जाता है। यह स्थिति उन्मुक्त समाजों में ही पाई जाती है। वस्तुतः बन्द समाजों में सामाजिक ढाँचे में परिवर्तन नहीं होता है।

3. विद्यायी अथवा राजनीतिक परिवर्तन

सामाजिक गतिशीलता के कारण कभी–कभी समाज मे कानून अथवा राजनीति द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों में या तो वृद्धि कर दी जाती है अथवा उन परिवर्तनों में ह्रास हो जाता है। कुछ व्यक्तियों की इन परिवर्तनों के फलस्वरूप सामाजिक स्थिति में स्वतः ही परिवर्तन हो जाता है।

4. अर्थव्यवस्था में परिवर्तन

सामान्यतः देखा गया है कि समाज में निर्धन, मध्यम तथा धनिक तीन प्रकार की स्थिति वाले व्यक्ति पाए जाते हैं। इनमें से धनिक वर्ग के व्यक्तियों को अधिक सम्मान सामान्यतः प्राप्त होता है। अतः जब कोई अपनी आर्थिक स्थिति में परिवर्तन ले आता है, तो उसकी सामाजिक स्थिति भी बदल जाती है। धनिक किसी कारणों से यदि निर्धन हो जाये तो उसकी सामाजिक गतिशीलता के कारण स्थिति गिर जाती है और यदि कोई निर्धन उन्नति करके मध्यम वर्ग में आ जाये तो उसकी सामाजिक स्थिति में वृद्धि होगी। इस प्रकार अर्थव्यवस्था अथवा आर्थिक स्थिति का सामाजिक गतिशीलता में पूर्ण प्रभाव होता है।

5. शैक्षिक तथा व्यावसायिक स्थिति में परिवर्तन

शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति के शैक्षिक स्तर में परिवर्तन होने से भी उसकी सामाजिक स्थिति में परिवर्तन आ जाता है। शिक्षा प्राप्त करके व्यक्ति समाज में सम्माननीय माना जाता है। इसके अतिरिक्त हमारी शिक्षा की कुछ शाखाएँ या क्षेत्र तो ऐसे हैं जिन्हें प्राप्त करने वाला व्यक्ति बहुत ही अच्छी सामाजिक स्थिति प्राप्त कर लेता है। निश्चय ही हम वर्तमान में देखते हैं कि स्वाभाविक रूप से प्रत्येक समाज में कुछ व्यवसायों तथा सेवाओं को अपेक्षाकृत अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

सामाजिक गतिशीलता से लाभ

निःसंदेह प्रत्येक समाज में सामाजिक गतिशीलता होनी आवश्यक है, क्योंकि इससे समाज व व्यक्तियों को अनेक लाभ होते हैं, इनमें से प्रमुख का वर्णन निम्नलिखित है–

1. सभी को पूर्ण तथा समान अवसर प्राप्त होना।
2. प्रतिभा के अनुरूप अपना विकास करने में सहायक।
3. व्यक्ति तथा समाज की विशेषताओं का पूर्ण उपयोग।
4. राष्ट्र की समृद्धि में वृद्धि।
5. व्यक्ति में निर्धारता आना।
6. समाज तथा व्यक्ति में नवीन ऊर्जा का संचार।
7. उन्नति के नवीन द्वार खुलना।
8. समाज की आवश्यकतायों की पूर्ति।
9. समाज में स्थिरता आती है।

सामाजिक गतिशीलता से हानियाँ

सामाजिक गतिशीलता से जहाँ अनेकानेक लाभ हैं, वहीं इससे कतिपय हानियाँ भी हैं। इनमें से प्रमुख हैं–

1. ऐसा प्रायः देखने में आता है कि कभी–कभी व्यक्ति सामाजिक गतिशीलता के कारण उन्नति करते–करते इतना आगे बढ़ जाता है कि उसमें दंभ तथा घमंड की भावना विकसित हो जाती है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति का समाज विशेष उससे दूर होने लगता है तथा व्यक्ति में पृथकतावादी प्रवृत्ति बढ़ने लगती है।
2. सामाजिक परम्पराएं तथा संस्कृति शिथिल पड़ने लगती है।
3. इसमें समाज में विघटन की गति तीव्र हो जाती है।
4. समाज में अनेक बुराईयाँ तथा नकारात्मक तत्व प्रवेश कर जाते हैं।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि व्यक्ति शिक्षा के द्वारा अपने को नए व्यवसायों के योग्य बनाता है, शिक्षा से उसमें ज्ञान का विकास होता है, उसकी आकांक्षाएँ बढ़ती हैं तथा वह उन्नति की स्थिति में जाने के प्रयास करता है। अतः शिक्षा सम्पूर्ण समाज की सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करती है।